अब्राहम लिंकन

अब्राहम लिंकन

(१८०६-१८६५)

संयुक्त राज्य अमेरिका के १६वें राष्ट्रपति

गेटिसबर्ग में अब्राहम लिंकन का भाषण

"८७ वर्ष पूर्व हमारे पूर्वजों ने इस महाद्वीप पर एक नये राष्ट्र को जन्म दिया था। इस राष्ट्र का जन्म स्वतन्त्रता की गोद में हुआ था और जन्म से ही इसका आदर्श यह रखा गया कि ईश्वर ने सब मनुष्यों को समान बनाया है।

"आज हम एक महान् गृह-युद्ध में संलग्न हैं और इस बात की परीक्षा कर रहे हैं कि यह राष्ट्र अथवा इसी प्रकार से जन्मा और यही आदर्श मानने वाला कोई भी अन्य राष्ट्र चिरकाल तक जीवित रह सकता है अथवा नहीं। हम आज उस युद्ध के एक महान् रणक्षेत्र में एकत्र हुए हैं और उस रणस्थल का एक कोना उन योद्धाओं के चिर-विश्राम के लिए समर्पित करने आये हैं, जिन्होंने राष्ट्र को जीवित रखने के लिए अपने जीवन की बलि दी है। उनके प्रति यह सम्मान प्रदर्शित करना सर्वथा उचित ही है।

"किन्तु यदि व्यापक दृष्टि से देखा जाय तो यह हमारे वश में नहीं कि हम इस भूमि को गौरव प्रदान करें और उसे पुण्य भूमि अथवा पवित्र भूमि बनायें। जिन जीवित अथवा दिवंगत वीर पुरुषों ने यहां संघर्ष किया था, वे इसे पहले ही पुण्यभूमि बना चुके हैं और उसे अधिक गौरवान्वित करना अथवा कलंकित करना हमारी दुर्बल शक्ति के बाहर है। जो कुछ हम यहां कहेंगे, संसार उस पर अधिक ध्यान नहीं देगा और न ही उसे बहुत दिनों तक स्मरण रखेगा, किन्तु उन वीर पुरुषों ने जो कार्य यहाँ किये हैं, उन्हें संसार भुला नहीं सकता। हम जीवित व्यक्तियों का यही कर्त्तव्य है कि उनके उस अपूर्ण कार्य को, जिसे उन्होंने इतनी उत्तमता से आगे बढ़ाया था, पूरा करने का सकल्प करें; हमारे सामने जो महान् कार्य शेष है, उसे पूरा करने में अपना जीवन अर्पित कर दें; उस कार्य के लिए दिवंगत सूरमाओं ने जितनी अधिक निष्ठा दिखाई थी उससे हम प्रेरणा तथा स्फूर्ति लें और यह दृढ़ संकल्प करें कि उनके प्राणों की आहुति व्यर्थ नहीं जायेगी; उस परमपिता की छत्रछाया में यह राष्ट्र नई स्वाधीनता को जन्म देगा; और 'जनता का शासन, जनता द्वारा शासन और जनता के लिए शासन' के सिद्धान्त का पृथ्वी से कभी लोप नहीं होगा।"

अब्राहम लिंकन—अपनी स्वाभाविक परोपकारवृत्ति और अपने धैर्य के कारण, जन-साधारण के लिए अपने प्रेम के कारण और 'जनता का, जनता द्वारा और जनता के हित के लिए शासन' के आदर्श में अपनी निष्ठा के कारण तथा अपने अनूठे जीवन और मृत्यु के कारण, संयुक्त राज्य अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का मानव जाति के इतिहास में एक अद्वितीय स्थान है।

विधि का विधान--सन् १८०६ में, जब लिंकन का जन्म हुआ, अमेरिका में दास-प्रथा प्रचलित थी। अब्राहम के लिए विधि का विधान यही जान पड़ता था कि वह एक अनपढ़ खेतिहर बनें, इसकी कोई सम्भावना नहीं दीखती थी कि वह दास-प्रथा को समाप्त करके अमरिकी जन-मात्र को स्वतन्त्रता और समानतायें दिलायेंगे और स्वयं एक महामानव सिद्ध होंगे। उनके जीवन में प्रजातन्त्र, मानवीय अधिकारों और व्यक्ति के गौरव के आदर्शों ने सच्ची सार्थकता पायी।
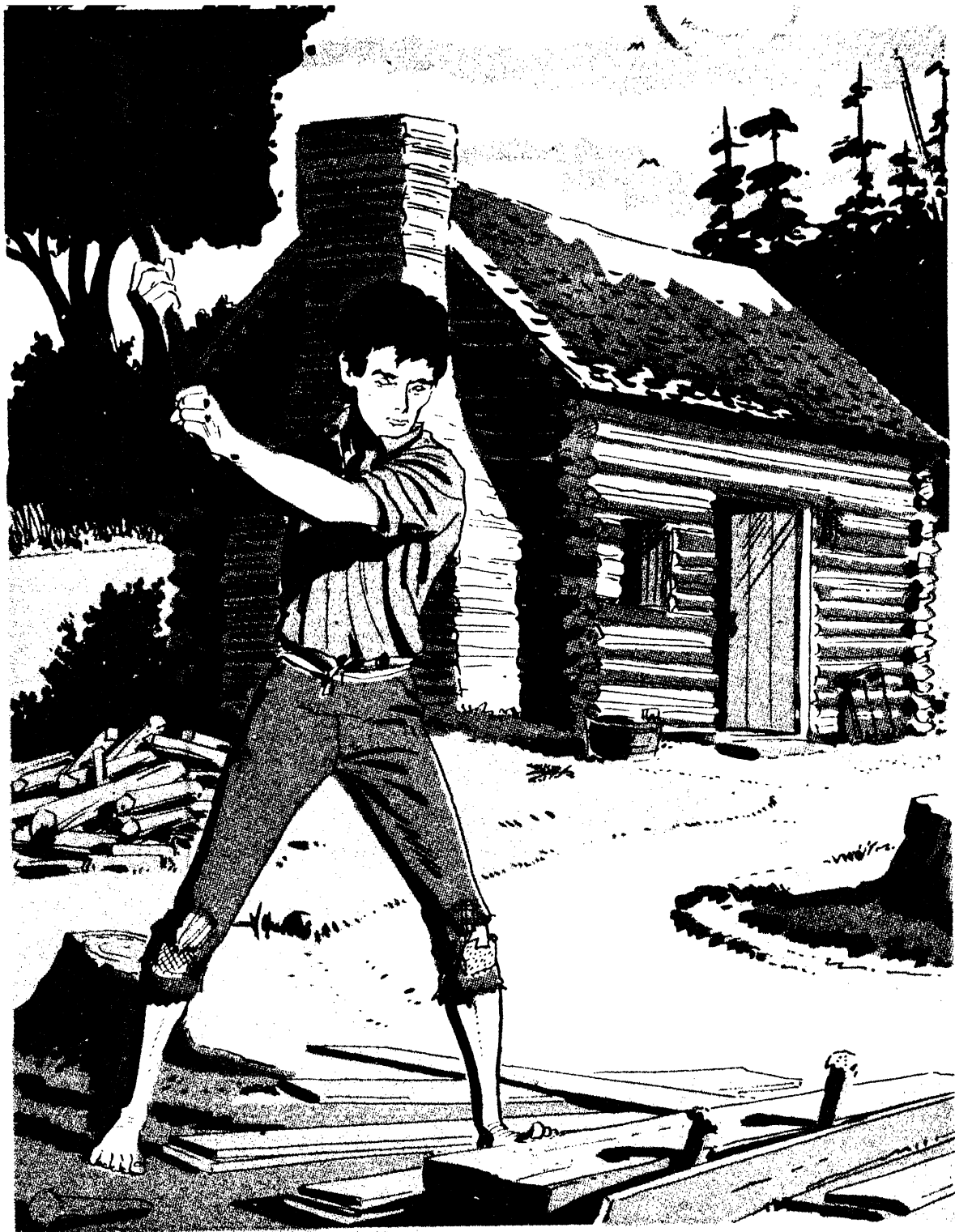
अमेरिका--उन्नीसवीं शताब्दी के आदिकाल में अमेरिका एक युवा और विकासशील देश था। उसे स्वाधीनता प्राप्त किये, अभी मुश्किल से पच्चीस वर्ष हुए थे। दासता की प्रथा उससे पहले के उपनिवेशकाल से चली आयी थी। साहसी लोग बसे हुए पूर्वी इलाकों से पश्चिम के पथ-हीन अछूते प्रदेशों की ओर बढ़ रहे थे। ऐसी ही नयी तोड़ी हुई जमीन से अब्राहम के पिता जीविका अर्जित करने का यत्न कर रहे थे।

परिवार–पिता लिंकन बढ़ई थे, किन्तु परिवार के पालने के लिए उन्हें बाध्य होकर जंगल में शिकार की खोज में बहुत समय बिताना पड़ता था। इस प्रकार एब, उनकी बहिन, और खेती-बाड़ी की देख-भाल का भार ममतामयी माता नैंसी हैंक्स लिंकन पर ही था। अपने जीवन की प्रेरणा का श्रेय एब ने माता को ही दिया है। उन्होंने कहा था—"जो कुछ मैं हूँ, या कभी होने की आशा करता हूँ, वह सब माँ की देन है। भगवान् उन्हें सुखी रखें।"

शिक्षा—पड़ोस में लकड़ी के एक मकान में पाठशाला खुलने पर श्रीमती लिंकन ने बालक एब और उनकी बहिन को अक्षर और शब्दों के हिज्जे सीखने के लिए उसमें भरती करा दिया। उन्होंने बार-बार उन्हें समझाया—"पढ़ना-लिखना सीख कर तुम्हें ज्ञान प्राप्त करना चाहिए; तभी बड़े होकर तुम विद्वान् और भलेमानस बन सकोगे" एब को माता के ये शब्द सदा याद रहे।

इंडियाना—जब अब्राहम की आयु सात वर्ष थी तब उनके पिता परिवार को लेकर इंडियाना में खेती की जमीन (फार्म) पर जा बसे। यह भी प्रायः सुनसान जंगल ही था। शरद ऋतु के अन्तिम दिनों में लिंकन-परिवार मकान बनाने के लिए जंगल साफ करने के काम में जुट गया। जाड़ा प्रायः सिर पर था, इसलिए बड़ी जल्दी में उन्होंने जैसे-तैसे लकड़ी का घर तैयार किया। यहाँ कोई पाठशाला नहीं थी, और एब भी खेती का ही काम करने लगे।

दुर्दैव—सन् १८१८ की शरद् में, उस देहाती प्रदेश में एक अजीब महामारी फैली जिसमें अनेक व्यक्ति मारे गये और बहुत से पशु भी। एब की माँ भी इस रोग से आक्रान्त हुई, और सप्ताह भर में चल बसीं। जिसने उन सब को इतना स्नेह दिया था और उनकी इतनी सेवा की थी, उस ममतामयी के शव के लिए चीड़ का अनगढ़ बक्सा तैयार करने में एब ने पिता की सहायता की।

अकेलापन—जाड़ों में लिंकन-परिवार पर अकेलेपन की गहरी उदासी छायी रही। बच्चों को मां की याद बहुत सताती थी। पिता को बाध्य होकर शिकार के लिए लम्बी-लम्बी अवधियां जंगल में बितानी पड़ती थीं और बच्चे निर्जन जंगल की कुटिया में अकेले रहते थे। ऐसी सुनसान रातों में नौ वर्ष के एब अपनी छोटी बहिन को दिलासा दिया करते।

नया प्रेम-परिवार के लिए वह दिन बड़े आनन्द का था जब पिता उनके लिए एक नयी माता ले आये। पिता लिंकन ने दूसरा विवाह एक विधवा से किया जिनके तीन सन्तान—एक पुत्र और दो कन्याएँ थीं। नयी श्रीमती लिंकन समर्थ और सुघड़ महिला थीं, और उनके आते ही काठ का वह अस्त-व्यस्त घर फिर से जगमगा उठा। शीघ्र ही वह फिर पारिवारिक सुख का पवित्र वातावरण छा गया।

समस्या !—जब अब्राहम की आयु ग्यारह वर्ष हुई तब लिंकन-परिवार के पड़ोस में एक पाठशाला खुली। अब यह समस्या हुई कि अब्राहम को पढ़ने भेजा जाय या नहीं। पिता का मत था कि अब्राहम जैसा स्वस्थ-शरीर और समर्थ लड़का खेती में जितना उपयोगी हो सकता है उतना पाठशाला में कदाचित् नहीं हो सकेगा। किन्तु श्रीमती लिंकन की राय थी कि उन्हें स्कूल जाना चाहिए।

पुस्तकें—विमाता के आग्रह से अब्राहम को स्कूल जाने का अवसर मिल गया। यहीं से उनका पुस्तक-प्रेम आरम्भ हुआ। किन्तु उनकी पढ़ाई बहुत अनियमित रही क्योंकि खेती के लिए उनकी बार-बार ज़रूरत पड़ती थी। स्कूल वह एक वर्ष से कुछ ही अधिक समय जा पाये होंगे। पर उन्हें पढ़ने के लिए जो कुछ भी मिल सका उन्होंने पढ़ डाला। कभी कभी तो पुस्तक उधार लेने या लौटाने के लिए उन्हें मीलों चल कर जाना पड़ता।
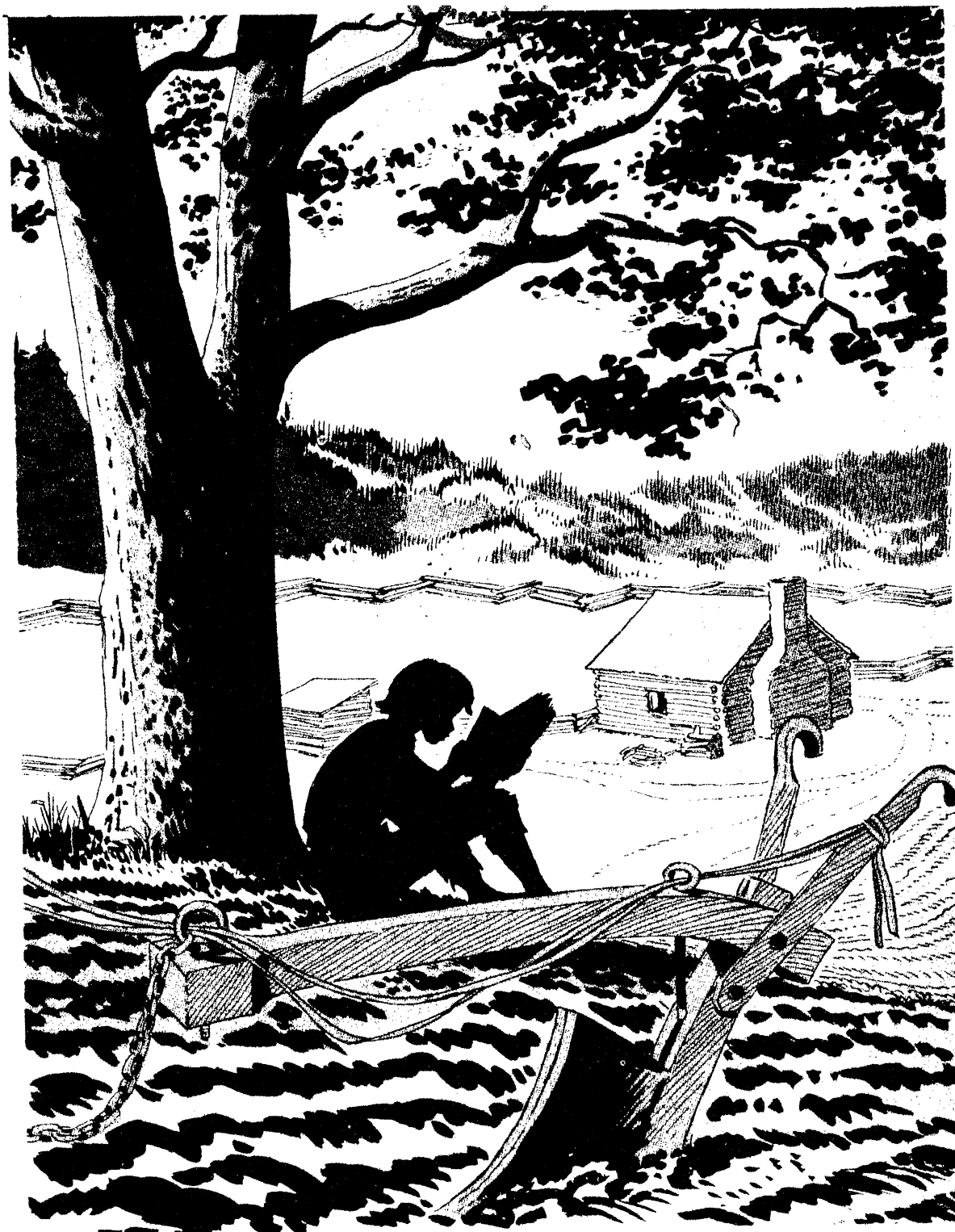
अध्ययन—दिन भर खेत पर काम करके रात को एब कुटिया की अंगीठी के अंगारों की रोशनी में पढ़ाई करते, और लकड़ी के बेलचे पर कोयले से लिखने का अभ्यास किया करते। बेलचे पर जगह भर जाने पर लेख का एक भाग मिटा कर दूसरे भाग के लिए जगह बना लेते।

दास-प्रथा—उन्नीस वर्ष की आयु में लिंकन मिसिसिपी नदी से माल ढोने वाली एक नाव में न्यू ऑर्लियन्स गये। यहीं पहले-पहल उन्होंने दासों को नजदीक से देखा। उससे उन्हें बड़ी घृणा हुई। इसके कुछ ही समय बाद लिंकन-परिवार फिर और आगे पश्चिम की ओर बढ़ा। वे इलिनौय में जा बसे और यहाँ फिर नयी भूमि तोड़ कर उन्होंने लकड़ी के तख्तों की कुटिया बनाई।
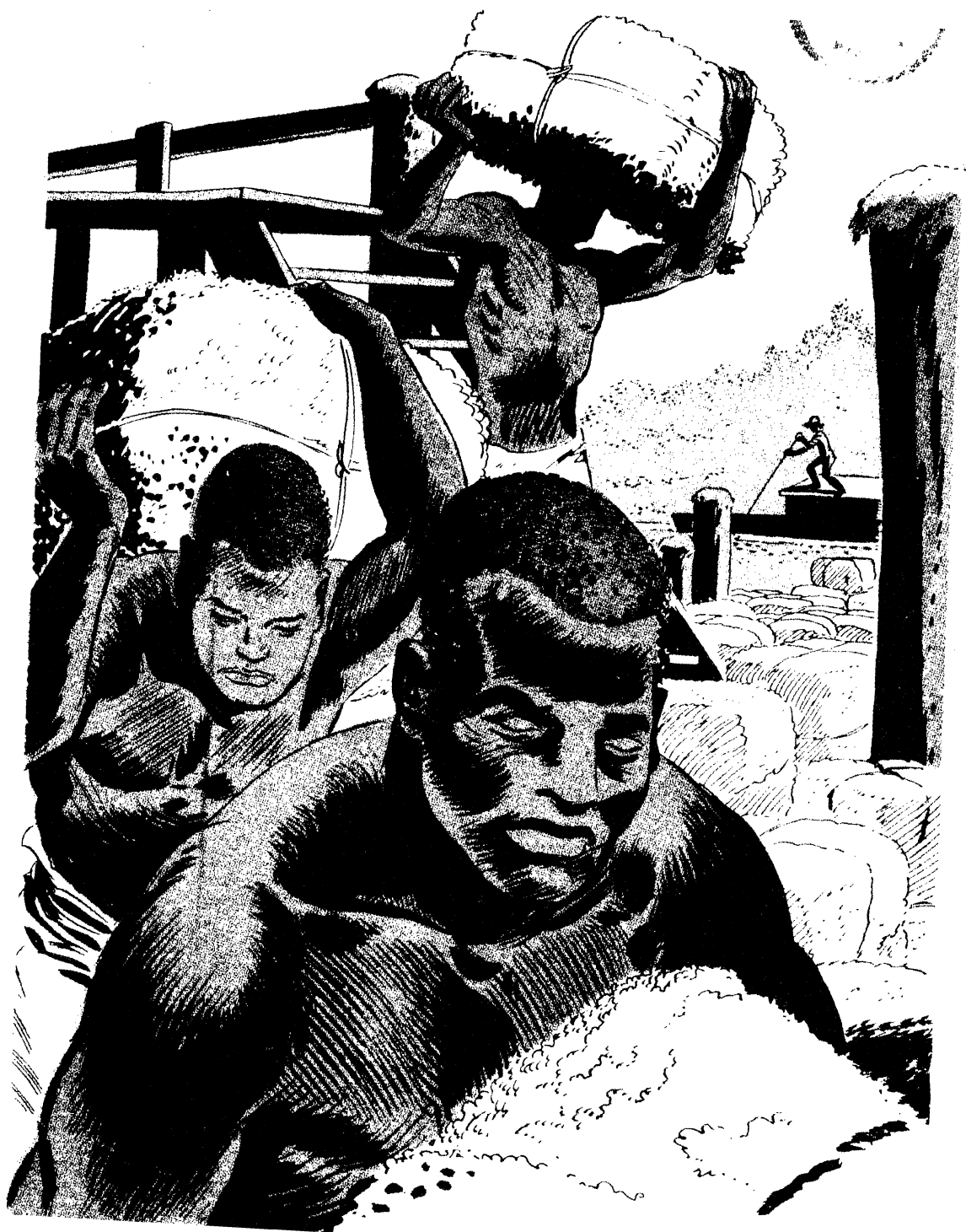
क्लर्क—बाइस वर्ष की आयु में लिंकन इलिनौय सीमान्त की एक दुकान में क्लर्क हो गये। उनके विचारों और भावनाओं की गहराई, उनकी ईमानदारी, मधुर विनोदी स्वभाव और सहज दयालुता ने लोगों को उनकी ओर आकृष्ट किया। कहानियाँ कहने में कुशल और वाद-विवाद में पटु होने के साथ-साथ वह शासन-पद्धति की जानकारी हासिल करने में भी बहुत दिलचस्पी लेते थे। मित्रों ने उनसे आग्रह किया कि वह इलिनौय राज्य की विधान-सभा के चुनाव में उम्मीदवार बनें।
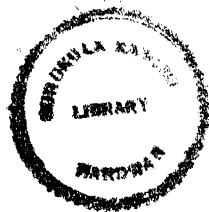
विधान-सभा—पचीस वर्ष की आयु में लिंकन ने राजनीति में प्रवेश किया। उनका कद लम्बा था और शरीर सुडौल नहीं था। वे चौड़े किनारे का टोप, घर में कते कपड़े की कमीज और नोकीले कोनों वाला कोट पहनते थे; उनकी पतलून जूतों से काफी ऊँची रहती थी। उनकी ओर देख कर अजनबी सोचते—"यह आदमी तो निरा मसखरा है!" किन्तु उनका बोलना आरम्भ करते ही उनकी रूखी आकृति का ध्यान किसी को न रहता। सन् १८३४ में वह इलिनौय विधान-सभा के सदस्य चुन लिये गये।

कानून—राज्य की विधान-सभा में रहते हुए जनता की सेवा से बचे हुए समय में लिंकन कानून का अध्ययन करते रहे। विधान-सभा के लिए वह तीन बार फिर निर्वाचित हुए। सन् १८३६ में उन्हें वकालत करने की अनुमति मिल गयी। जब कभी उनके मुवक्किल फ़ीस देने में असमर्थ होते तो वह खेती की पैदावार भी स्वीकार कर लेते।
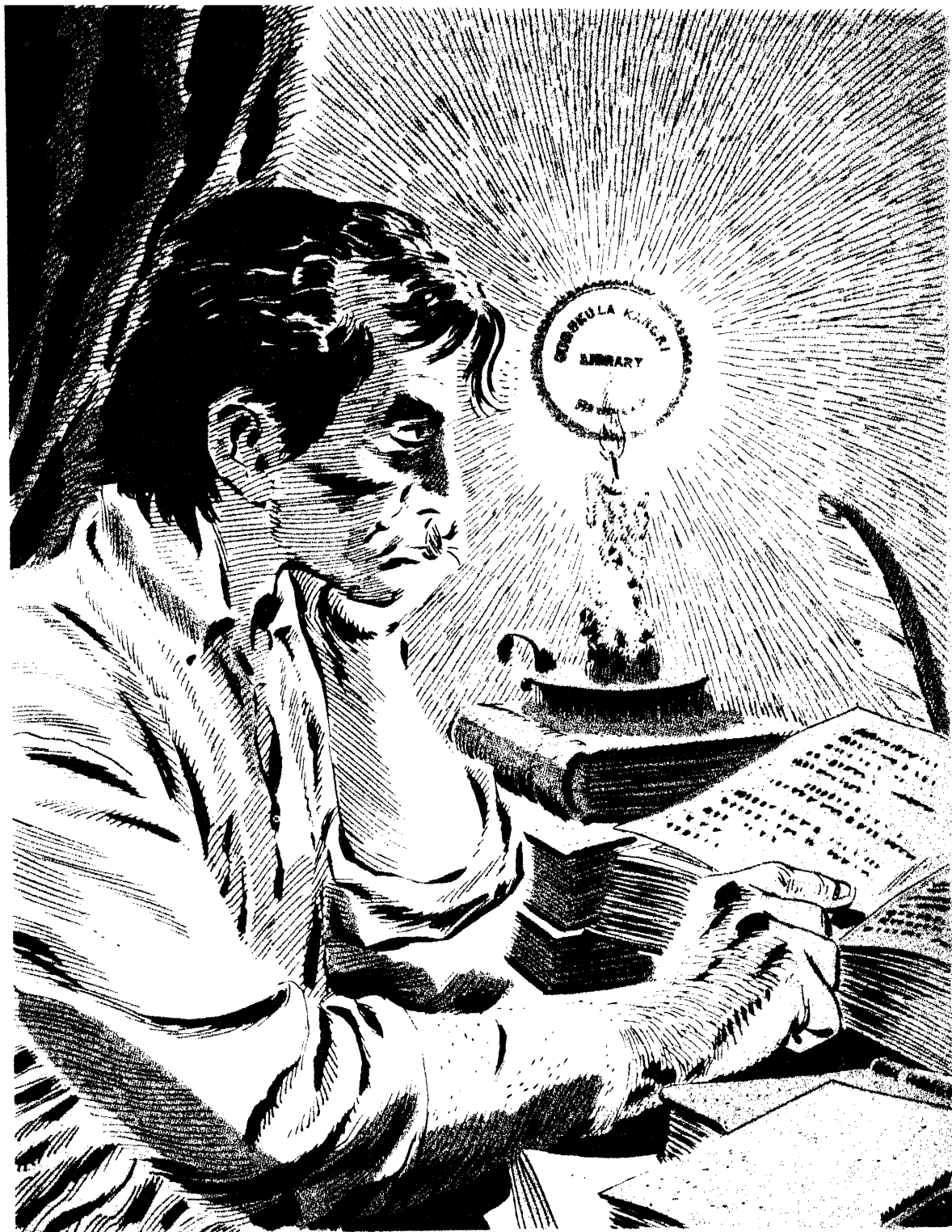
प्रेम—लिंकन को एन रुटलेज से प्रेम था, किन्तु विवाह की तिथि से कुछ दिन पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी। लिंकन का दिल टूट गया। अपना दुख भुलाने के लिए वे अपने काम और जन-सेवा में और भी गहराई से जुट गये। वर्षों बाद, जब अभी उनकी वकालत जमी नहीं थी, उनका परिचय मेरी टॉड से हुआ। सन् १८४३ में उनका विवाह हो गया। लिंकन के मित्रों ने उनसे अमेरिकी कांग्रेस (संसद) के चुनाव के लिए खड़े होने का आग्रह किया।

कांग्रेस—सैंतीस वर्ष की आयु में लिंकन ने राष्ट्र की राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया। वह संसद (कांग्रेस) की निचली सभा-प्रतिनिधि-सभा (हाउस आफ़ रेप्रेजेंटेटिव्ज़) के सदस्य चुने गये। यहाँ वह दास-प्रथा का, और नये राज्यों या प्रदेशों में उस प्रथा के प्रसार का निरन्तर विरोध करते रहे।
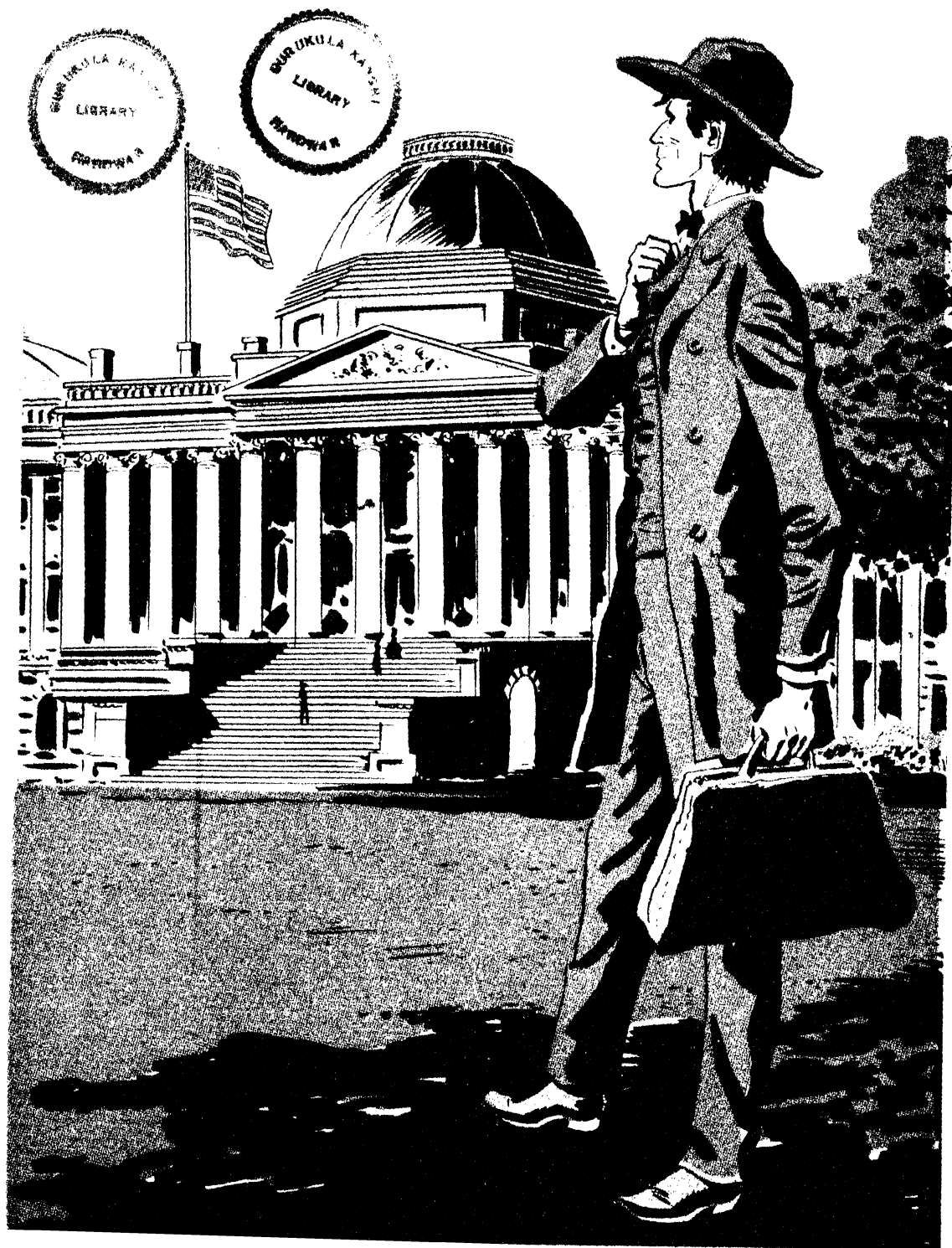
उग्र मतभेद—उपनिवेशवाद के दिनों में अमेरिका में जो नीग्रो लाये जाते रहे थे, उनसे दासों का काम लिया जाता था। अब देश में इस प्रथा के बारे में उग्र मत-भेद हो गया। लिंकन ने स्वाधीन देश में एक व्यक्ति द्वारा दूसरे के दास बनाये जाने का तीव्र विरोध किया। उनका विश्वास और कथन यही था कि —"स्वाधीनता हर व्यक्ति का चिरन्तन और पवित्र अधिकार है।"

वाद-विवाद—सन् १८५४ में, जब ऐसा जान पड़ने लगा कि दास-प्रथा अमेरिका में और भी अधिक फैलेगी, तब लिंकन ने अपनी वकालत छोड़ दी और अमेरिकी संसद के लिए फिर खड़े हुए। इस बार उन्होंने उच्च सभा (सेनेट) का चुनाव लड़ा। उनके चुनाव-आन्दोलन ने प्रतिद्वन्दी उम्मीदवार स्टीवन ए० डगलस के साथ वाद-विवादों की एक शृंखला का रूप धारण कर लिया। डगलस चुने गये, पर विवाद का विषय हो कर भी लिंकन ने राष्ट्रव्यापी प्रतिष्ठा पायी।
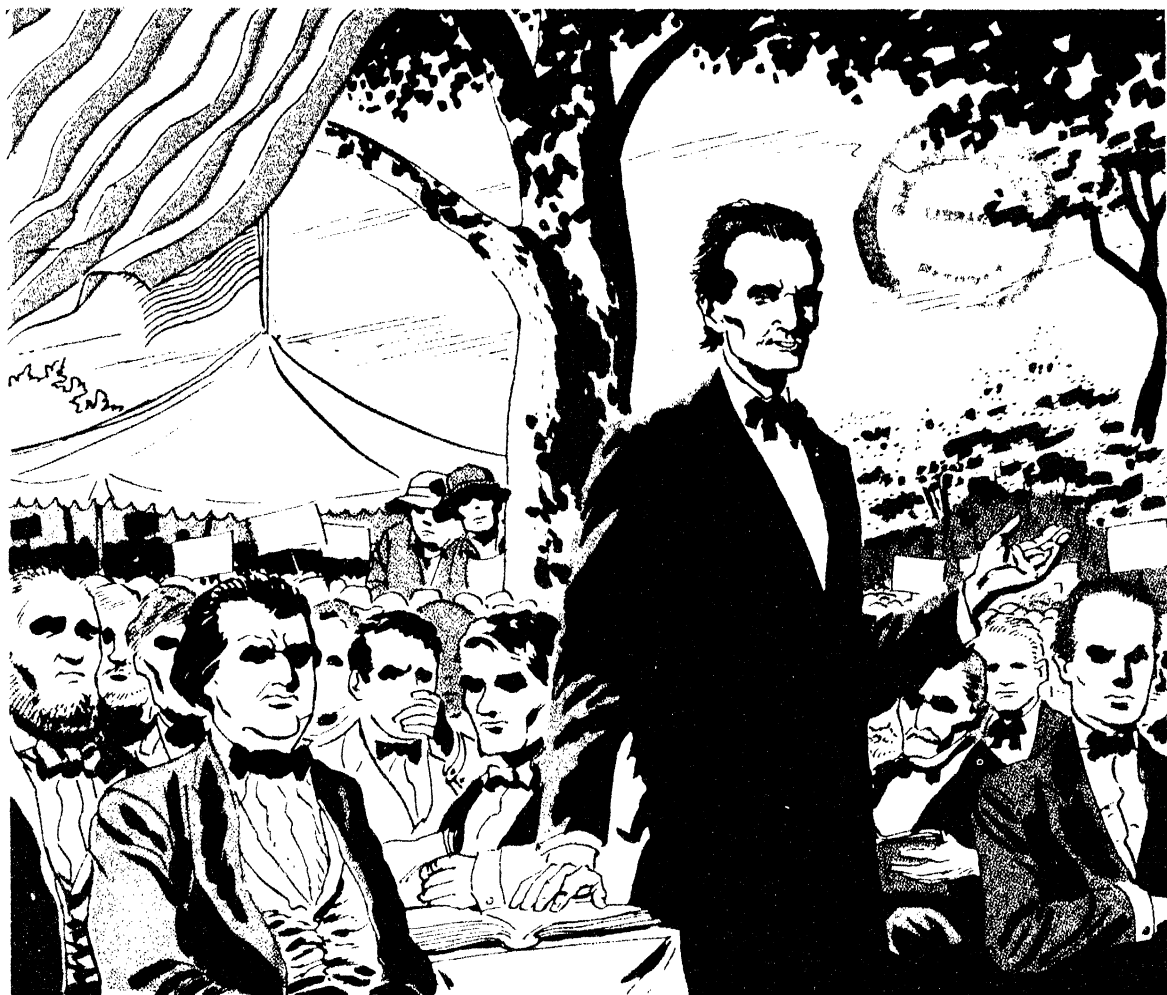
राष्ट्रपति–लिंकन ने धैर्य नहीं खोया और दासता के विरुद्ध अपना संग्राम जारी रखा। सन् १८६० में, कटु वाद-विवाद के बीच, वह अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गये। देश में बड़ी अशान्ति फैल रही थी। उनका चुनाव होने पर राष्ट्र दास-प्रथा के प्रश्न को लेकर दो दलों में बँट गया, जिसकी पहले से सम्भावना थी। ग्यारह दक्षिणी राज्य संघ से अलग हो गये, संयुक्तराज्य से सम्बन्ध तोड़ कर उन्होंने 'अमेरिकी सम्मिलित राज्य' की स्थापना की।
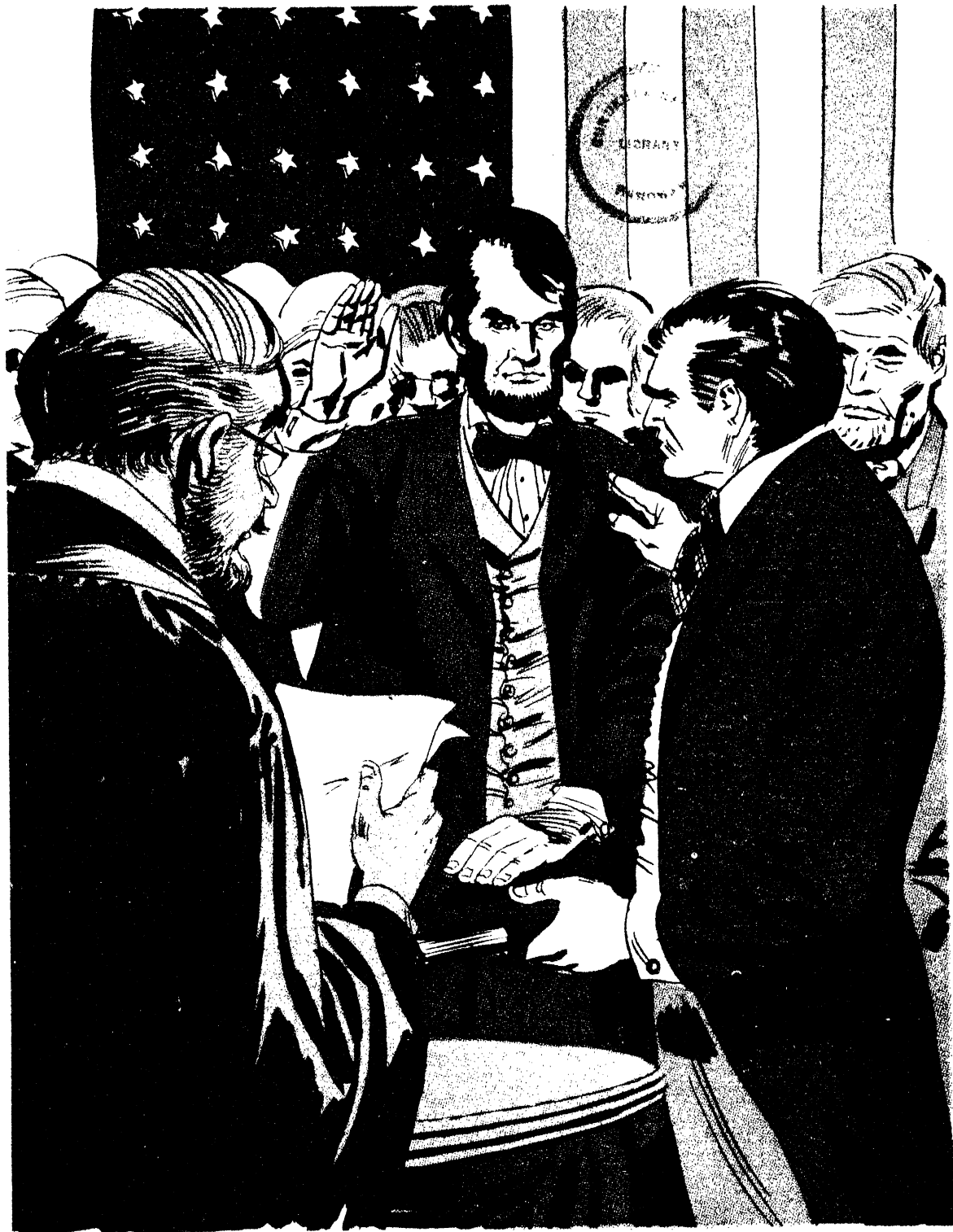
युद्ध—बहुत से झगड़े के बाद, और शान्ति तथा एकता के लिए लिंकन के प्रयत्नों के बावजूद सम्मिलित राज्यों की सेना ने संघ के एक दुर्ग पर गोले बरसाये और इस प्रकार नया राष्ट्र एक भयानक गृह-युद्ध (१८६१-६५) में फँस गया। मानवता-प्रेमी लिंकन को गहरा दुख हुआ। एक ओर तो जिस दास-प्रथा से उन्हें घृणा थी उसका अन्त नहीं हुआ था और दूसरी ओर, उनके भाई अमेरिकी आपस में लड़ रहे थे तथा संघ की सेनाओं की गहरी क्षति हो रही थी।

उद्देश्य—लिंकन के जीवन के अब दो ही उद्देश्य रह गये थे—विभाजित राष्ट्र को एक करना और दासों को मुक्त कराना। उनके कटु आलोचक मानवतावादी, और संघ की सेना के प्रधान सेनापति के रूप में उनके कार्य को और भी कठिन बना रहे थे। लिंकन शान्ति के लिए हृदय से प्रार्थना करते रहे और अपने उद्देश्यों पर दृढ़ रहे। धीरे-धीरे युद्ध का पासा संघ की सेनाओं के पक्ष में पलट गया।

दासों की मुक्ति—अन्त में सन् १८६३ में, युद्ध के मध्य में ही इतिहास का एक महान् घोषणा-पत्र तैयार हुआ। लिंकन ने अपनी 'दासों की मुक्ति-घोषणा' जारी की जिससे दास-प्रथा का अन्त हो गया। किसी समय जहाँ शान्तिमय खेत थे वहीं संग्राम क्षेत्रों में मरने वाले अपने देशवासियों के शोक में डूबे हुए लिंकन, फिर से शान्ति की प्रतिष्ठा और संघ की एकता के प्रयत्न में लग गये।
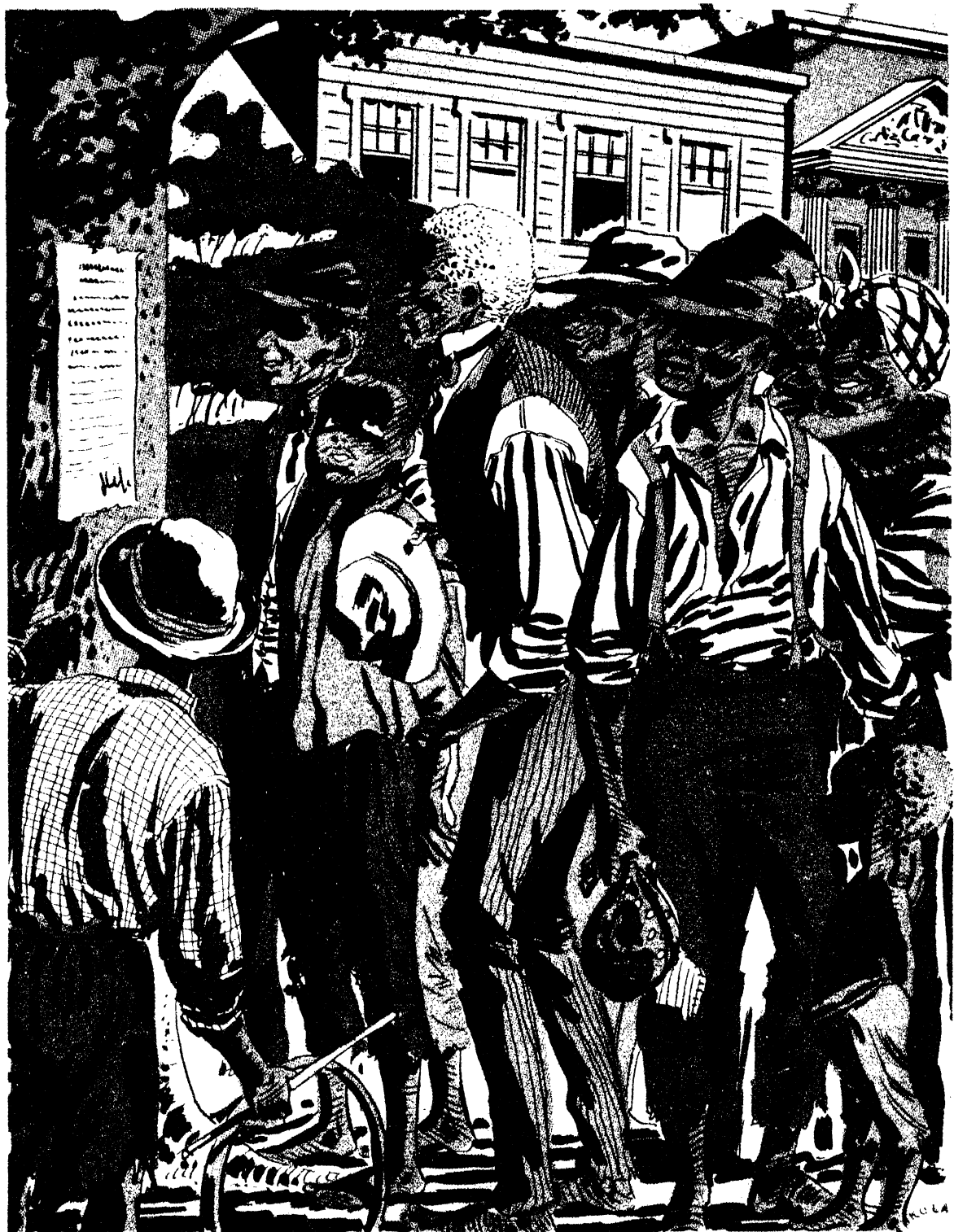
गेटिसवर्ग का भाषण—सन् १८६३ में ही लिंकन ने वह भाषण दिया जिसे इतिहास के सर्वाधिक प्रसिद्ध भाषणों में समझा जाता है। गेटिसबर्ग की संग्राम-भूमि में एक कब्रिस्तान को स्थापित करते हुए उन्होंने वे अमर शब्द कहे जो कि प्रजातन्त्र के आदर्श का सार व्यक्त करते हैं—"···जनता का, जनता द्वारा और जनता के लिए शासन, के सिद्धान्त का पृथ्वी पर से कभी लोप नहीं होगा।"

पुनर्निर्वाचन—यद्यपि राष्ट्रपति-पद की पहली अवधि में उनकी लोक-प्रियता को गहरा धक्का लगा था, फिर भी सन् १८६४ में लिंकन दुबारा राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। बहुत से लोग उन्हें राज्यों की आपसी फूट, और गृह-युद्ध के आरम्भिक दिनों में संघ की सेनाओं की हार के लिए उत्तरदायी ठहराते थे। लेकिन दासों की मुक्ति-घोषणा और संघ की सेनाओं की नयी विजयों के कारण उत्तर में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ गयी थी।
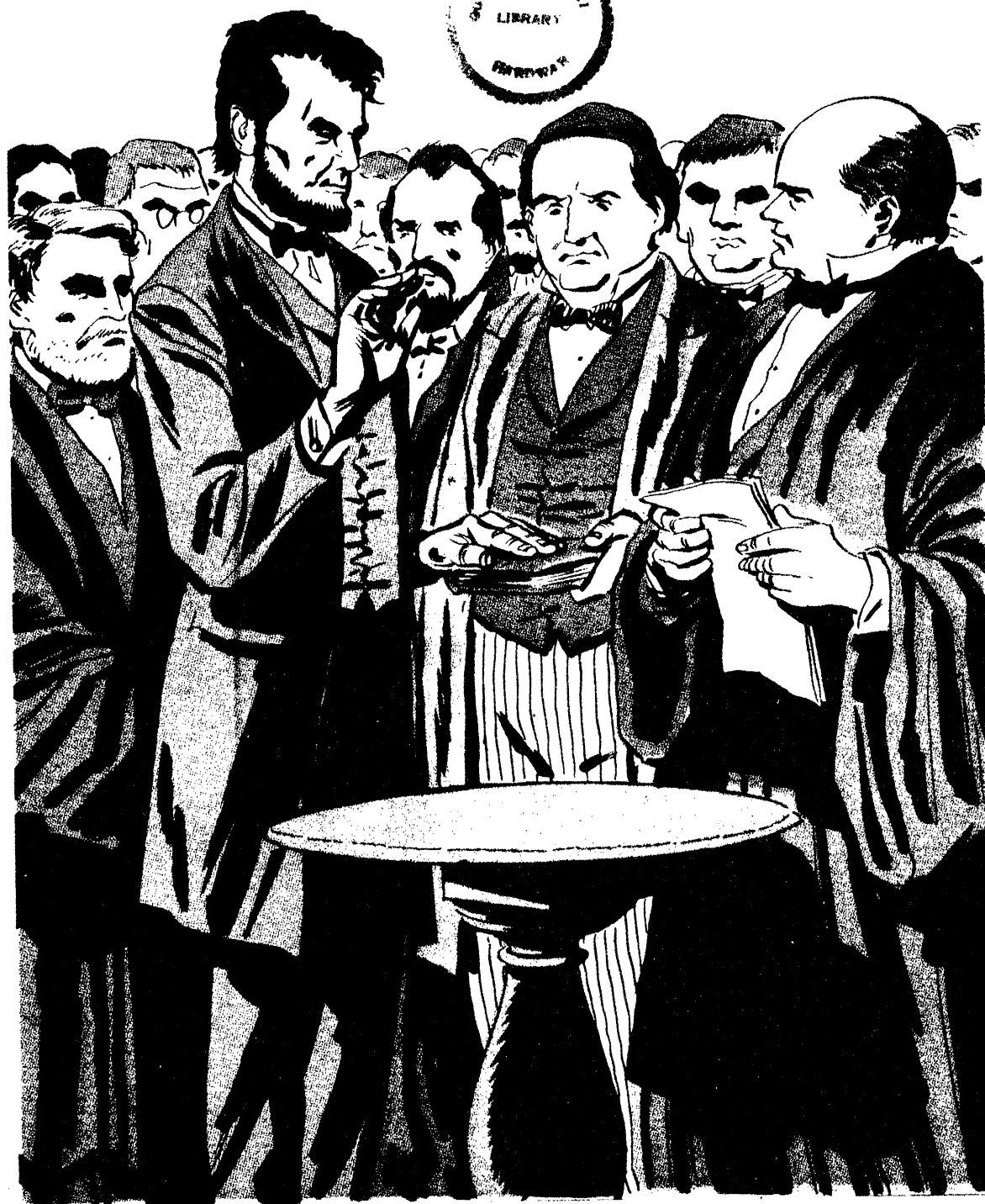
शान्ति—सन् १८६५ में संघ सेनाओं की विजय के साथ गृह-युद्ध का अन्त हो गया। पारिवारिक कलह समाप्त हुई। चार वर्ष का दुखद प्रसंग समाप्त हुआ। शान्ति और स्वतन्त्रता की प्रतिष्ठा हुई और राज्य-संघ सुरक्षित रहा। देश आनन्द से पागल हो उठा। देश भर के गिरजाघरों में धन्यवाद की प्रार्थनाएं की गयीं।

हत्या—लिंकन शान्ति और एकता की अपनी योजनाओं को साकार होते न देख सके। युद्ध के भार से मुक्त होने के केवल ५ दिनों बाद वाशिंगटन की एक रंगशाला में बैठे हुए उन पर दक्षिण के एक मतान्ध अभिनेता जान विल्क्स बूथ ने गोली चला दी। गोली सिर में लगी और कुछ घण्टों बाद लिंकन की मृत्यु हो गयी। उनका महान् कार्य पूरा हो गया था।

मानव-प्रेम—शान्ति के लिए लिंकन की योजनाएं उनके विवेक और मानव-प्रेम का प्रमाण थीं। गृह-युद्ध आरम्भ करने के लिए दक्षिण के विद्रोही राज्यों को दण्ड दिया जाय, यह उन्होंने कभी नहीं माना। उनके शब्द थे : "किसी के प्रति दुर्भावना के बिना...सभी के लिए उदार-भाव रखते हुए...हम अपने राष्ट्र के घावों की मरहम पट्टी करें।"
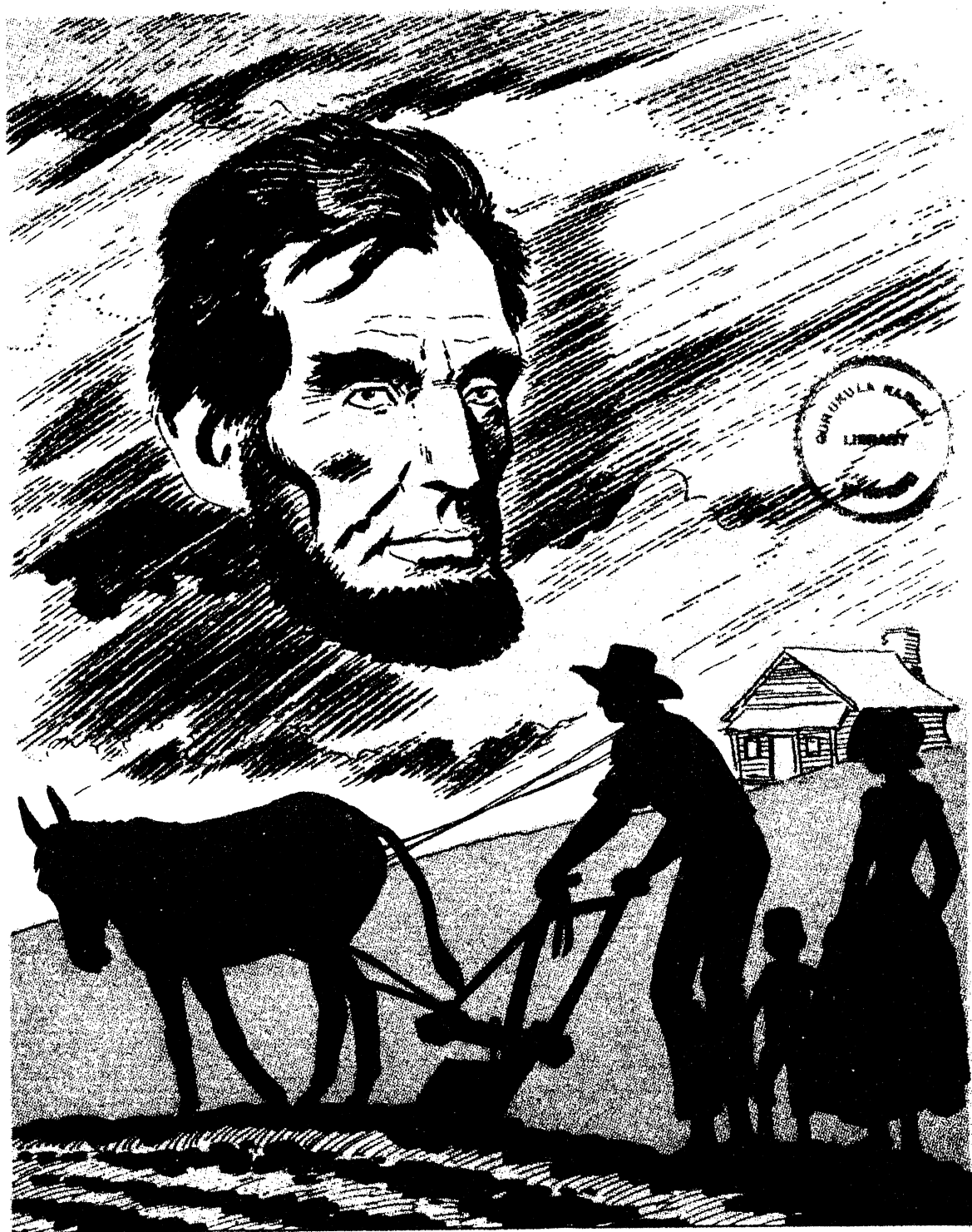
वसीयत—अमेरिकियों के लिए, और अन्य अनेक राष्ट्रों की जनता के लिए, अब्राहम लिंकन मानव-प्रेम और प्रजातन्त्र के सम्मानित प्रतीक हैं। जनता में, स्वाधीनता में, और मानव-मात्र की सदाशयता में उनकी आस्था अमेरिका की मान्यताओं का सार है। लिंकन के जीवन के अध्ययन के द्वारा हम एक राष्ट्र की आत्मा का स्पर्श करते हैं।

IN THIS TEMPLE
AS IN THE HEARTS OF THE PEOPLE
FOR WHOM HE SAVED THE UNION
THE MEMORY OF ABRAHAM LINCOLN
IS ENSHRINED FOREVER